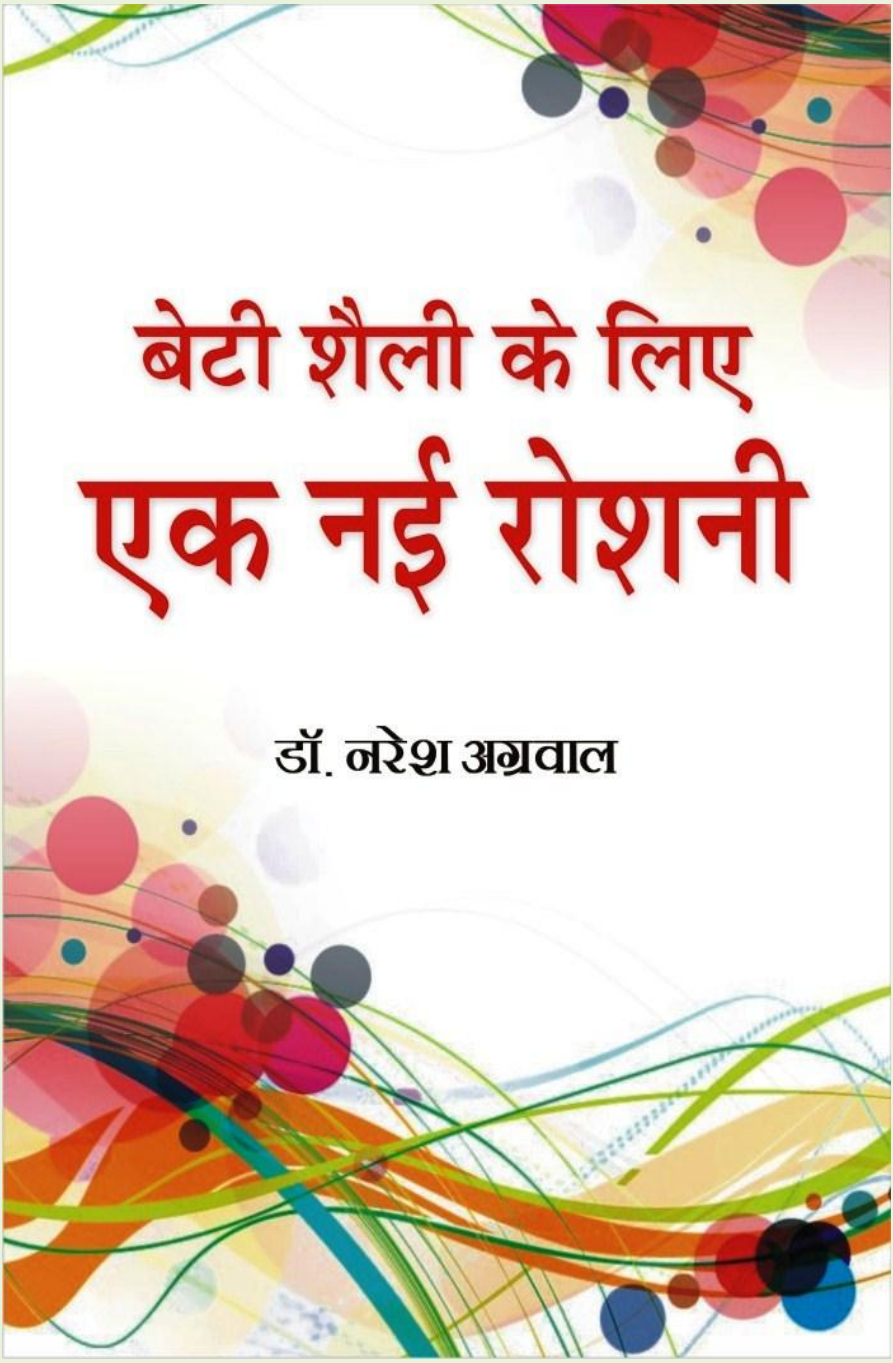
बेटी शैली के लिए
एक नई रोशनी
डॉ. नरेश अग्रवाल

बेटी शैली के लिए एक नई रोशनी

डॉ. नरेश अग्रवाल

शिक्षा से संबंधित अत्यंत उपयोगी पुस्तक

सर्वाधिकार सुरक्षित – डॉ. नरेश अग्रवाल

इस 'ई–पुस्तक' का प्रकाशन डॉ. नरेश अग्रवाल द्वारा स्वयं किया गया है।

ई–पुस्तक प्रकाशन वर्षः सन् 2014

डॉ. नरेश अग्रवाल-एक परिचय

''नरेश का मिजाज एक चिन्तक का है, वे जीवनानुभवों की गहराई में उतरने का माद्दा रखते हैं।'' – इंडिया टुडे

1 सितम्बर 1960 को जमशेदपुर में जन्म।

अब तक स्तरीय साहित्यिक कविताओं की 6 पुस्तकों का प्रकाशन तथा शिक्षा सम्बन्धित 6 पुस्तकों का प्रकाशन। साहित्य जगत में रचित पुस्तकों को अच्छी ख्याति प्राप्त। 'इंडिया टुडे' एवं 'आउटलुक' जैसी पत्रिकाओं में भी इनकी समीक्षाएँ एवं कविताएँ छपी हैं। देश की सर्वोच्च साहित्यिक पत्रिका 'आलोचना' में भी इनकी कविताओं को स्थान मिला। लगभग सारी स्तरीय साहित्यिक पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित।

'मरुधर' रंगीन द्विमासिक साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन पिछले चार वर्षों से लगातार कर रहे हैं, जो आर्ट पेपर पर छपती है।

सन् 2014 में सूक्तियों पर 'सूक्ति–सागर' नाम से एक पुस्तक लिखी, जो भारतवर्ष में संभवतः यह पहला प्रयास होगा जब किसी लेखक द्वारा स्तरीय 1000 सूक्तियाँ हिन्दी भाषा में लिखी गयी।

'हिंदी सेवी सम्मान', 'समाज रत्न' सम्मान, अक्षर–कुंभ सम्मान आदि अनेक सम्मानों से सम्मानित।

पौधों की बोनसाई विद्या में पूर्ण रुप से पारंगत तथा हजारों र्दुलभ पौधे इनके संग्रह में शामिल। बोनसाई में अनेक पुरस्कार मिले।

शतरंज, ज्योतिष, हस्त रेखा एवं होम्योपैथी में कई साल तक विस्तृत अध्ययन।

लगभग 5000 पुस्तकें इनके निजी पुस्तकालय में संग्रहीत हैं।

फोटोग्राफी विद्या में पूर्ण रुप से दक्ष तथा अपने भ्रमण के दौरान हजारों तस्वीर का संग्रह इनके बेवसाईट पर उपलब्ध हैं। यात्रा के बेहद शौकीन तथा अनगिनत जगहों की यात्रा की।

सम्पर्क–

रेखी मेन्शन, 8 डायगनल रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर–831001

दूरभाष – 9334825981, 7488504892

ई. मेल – smcjsr77@gmail.com

बेवसाईट : www.nareshagarwala.com

भूमिका

'बेटी शैली के लिए एक नई रोशनी' एक नये ढंग की कृति है। इसमें संगृहीत रचनाओं में बोधकथा तथा गद्यात्मक काव्य दोनों का रसात्मक समन्वय देखा जा सकता है। यह बेटी से वार्तालाप कोई सामान्य बातचीत नहीं है। इसकी पृष्ठभूमि में लेखक के द्वारा संचित वह अनुभव–संपदा है, जो, जो सूक्ष्म पर्यवेक्षण से ही किसी को प्राप्त हो पाती है। श्री नरेश अग्रवाल को वह दृष्टि प्राप्त है, जिस पैनी दृष्टि से कोई अपने चतुर्दिक का पर्यवेक्षण कर पाता है। यह स्मरणीय है कि नरेशजी मूलतः एक व्यवसायी हैं और जो व्यवसायी होता है, वह एक सफल पर्यवेक्षक और मनोविज्ञ भी होता है। परंतु, प्रत्येक व्यवसायी को मृग की तरह ही अपनी नाभी की इस कस्तूरी का पता नहीं रहता। नरेश जी अन्य व्यवसायियों से इसी अर्थ में पृथक हैं, क्योंकि इन्हें अपनी भीतर छिपी इस 'कस्तूरी' का ज्ञान है। इसीलिए तो वह कस्तूरी की इस सुगंध से सबको सुवासित करने के लिए सक्रिय भी हैं।

'बेटी शैली के लिए एक नई रोशनी' एक विशिष्ट कृति है। यह बातचीत शैली को संबोधित है, लेकिन यह केवल उसके लिए ही नहीं है। यह प्रत्येक शैली और शैल के लिए है–वह चाहे भारत में रहता हो या संसार के किसी अन्य देश में। इसे अतिशयोक्ति न माना जाय, तो मैं यह भी कहना चाहूँगा कि यह वार्तालाप वैसे प्रत्येक व्यक्ति के लिए है, जो सफल, सार्थक और प्रगामी जीवन का आकांक्षी है।

श्रवण कुमार गोस्वामी
सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली–1

ताजगी भरी चमक

जो बचे हुए काम होते हैं वे सुबह के ताजगी भरे हाथ माँगते हैं ताकि वे जल्दी से जल्दी खत्म हो सके। सुबह के सूरज के चेहरे में जो ताजगी भरी चमक होती है वह काम के लिए निकलते मजदूरों में भी होती है। सुबह का जीवन जैसे सूखी रात में धीरे–धीरे पानी सींचने का आरंभ होना है। धीरे–धीरे बढ़ता प्रकाश सभी को पुकार रहा होता है और यह सुबह असंख्य औजारों के शोर से भर जाती है। तुम भी कहीं अलग नहीं हो और तुम भी इन सबों के साथ हो और तुम्हारी भी सुबह की यात्रा में अनंत संभावनाएँ छुपी हुई होती है।

❖❖❖

छात्र कुशल प्रबंधक ही होता है

जिन के सिर पर जिम्मेवारियाँ आती है उनकी अपने कर्मचारियों के प्रति उत्सुकता एवं चौकन्नापन बढ़ जाता है। जब वे अपने काम को दूसरों से अच्छी तरह से करवा पाते हैं तभी एक अच्छा प्रबंधक कहलाते हैं। अगर सही रुप में देखा जाए तो एक अच्छा छात्र कुशल प्रबंधक ही होता है क्योंकि वह हमेशा अपनी नजर पाठ के समझने एवं याद करने की क्रिया पर लगाता है। वह पाठों को समझने की सही प्रणाली एवं मानसिक व्यवस्था पर हमेशा गश्त लगाता है और परीक्षा में अधिकतम अंक पाने का मार्ग प्रशस्त करता है।

❖❖❖

किसी काम की चीज में

एक खोखले बाँस में जब तक सामान गोल आकार के कई छेद निश्चित दूरी पर नहीं किये जाते तब तक वह बाँसुरी नहीं कहलाती, मात्र बाँस ही रह जाती है। फूलों की खुशबू को कैद करने के लिए उन्हें इत्र में बदलना पड़ता है एवं लोहे की ताकत दिखलाने के लिए उन्हें अस्त्रों में। इस तरह से तुम देखोगी तुम्हारे हाथों में अनगिनत चीजें होती हैं लेकिन तुम्हारा सामर्थ्य उन्हें जब तक किसी काम की चीज में नहीं बदल देता है तब तक वे उपयोगी नहीं हो पाती। तुम्हें हमेशा अपनी पढ़ाई को भी कच्चे माल की तरह बार–बार अनेक रूपों में बदलना होता है तभी तुम्हारे पास एक बौद्धिक शक्ति का मजबूत भण्डार समृद्ध होता जाता है।

❖❖❖

जो समय खर्च होता है

जितने दिनों तक फूल कमरों में सजे रहते हैं उन्हें याद किया जाता है, बाद में उसे सब भूल जाते हैं। उसी तरह से किसी अच्छी चीज के निर्माण या सृजन में जो समय खर्च होता है उसे याद रखा जाता है और लोगों को बताया जाता है। व्यर्थ के कामों में खर्च हुए समय का न ही कोई हिसाब रखता है और न ही उसके बारे में किसी से कोई चर्चा करता है बल्कि इस व्यर्थ हुए समय के लिए मन में अफसोस जरुर पैदा हो जाता है।

❖❖❖

अपने अकेले रूप में

तुम हमेशा देखोगी की हमें नुकसान पहुँचाने वाले जीव जैसे दीमक, चींटी या चूहों की संख्या शुरु में बहुत कम होती है और देखते–देखते इनका एक बड़ा समूह बन जाता है और हमारा नुकसान भी बड़ी तेजी से होने लगता है। इसी तरह से बुरी आदतें या लत भी पहले अपने अकेले रूप में ही आक्रमण करती है लेकिन उनका कब्जा तुम पर हो जाने के बाद अन्य और भी कई तरह की बुरी आदतों की गुलाम तुम होती जाती हो। अतः कोई भी बुरी आदत तुम्हारी दिनचर्या में शामिल होने की कोशिश करे उसे तुम पर बैठने के पहले ही दूर हटा देना उचित होगा।

❖❖❖

अर्थहीन बातों को

कई बार छोटे–छोटे वाक्य महत्वपूर्ण होने के कारण बड़े–बड़े आकार में लिखे जाते हैं ताकि उन पर सब की नजर पड़ सके। जबकि अक्सर कम महत्वपूर्ण वाक्य समूहों को सिर्फ छोटी सी जगह ही दी जाती है। अगर तुम्हारी नजर में कोई बात छोटी सी ही लेकिन महत्वपूर्ण हो तो अपने मस्तिष्क में उसे बड़ा स्थान देना चाहिए। जबकि बेमतलब की अर्थहीन बातों को न ही याद रखना चाहिए और न ही अपने मस्तिष्क में कोई जगह देनी चाहिए।

❖❖❖

परीक्षा की नजदीकी का आभास

रेलगाड़ी बहुत दूर रहने पर भी पटरी के नजदीक अपने कानों को ले जाने पर उसके आने की आवाज स्पष्ट सुनाई देती है। जो इस बात का संकेत देती है कि जल्दी ही रेलगाड़ी स्टेशन पर पहुँचगी। इसी तरह साधारण किस्म के छात्र परीक्षा के बिल्कुल नजदीक आ जाने पर उसके बारे में सचेत होते हैं लेकिन मेधावी छात्र बहुत दिनों पहले से ही परीक्षा की नजदीकी का आभास अपने मन में रखकर जोर–शोर से तैयारी शुरु कर देते हैं।

❖❖❖

खुशियों का आदान-प्रदान

जब हमारी दी गयी किसी भी चीज से दूसरों को खुशी मिलती है तो वह भी हमें खुशी देना चाहता है। इस तरह से खुशियों का आदान–प्रदान होता रहता है। हम पेड़ में जितनी अधिक खाद एवं उर्वरक तत्व छिड़कते हैं वह अधिक से अधिक फल और फूल देकर हमारा प्यार वापस लौटा देता है। बच्चों को हम थोड़ा सा गोद में खिलाते हैं और वो हँस–हँस कर हमारी तबियत खुश कर देता है। विद्यालय के लिए हम कुछ अच्छा करते हैं जिससे उसका मान–सम्मान बढ़े तो विद्यालय में भी हमारी इज्जत बढ़ जाती है।

❖❖❖

शिक्षा की आग

आग को प्रज्वलित होते रहने के लिए बार–बार ईंधन चाहिए और जैसे ही ईंधन खत्म होगा आग भी स्वतः लुप्त हो जाएगी। इसी तरह की होती है शिक्षा की आग, जब तक इसे सुलगाने वाले तत्व यानि ज्ञान की बातें या ज्ञान को बढ़ाने का कोई स्वरुप मिलता रहता है, उसमें प्रगति होती रहती है। लेकिन जैसे ही तुमने नये–नये पाठ या नयी चीजें सीखनी बंद कर दी शिक्षा का विकास रुक जाता है। अतः शिक्षा की आग को हमेशा सुलगाने रखने की तुममें तत्परता रहनी चाहिए।

❖❖❖

एक कच्चापन

हर नया मजदूर यह जिज्ञासा रखता है कि दूसरे मजदूरों को कितनी मजदूरी मिलती है, प्रत्येक नया व्यवसायी पुराने व्यवसायी से अपनी आय की तुलना करता है। हर नया अधिकारी अपने पद की ताकत को दूसरे अधिकारियों की ताकत से मापता है। ये सब आरंभ की बातें हैं और कुछ स्वभाविक भी है दूसरों की आय की बारे में जानने की कोशिश करना, दूसरों की पद प्रतिष्ठा आदि की ओर झुकना। लेकिन इस तरह का अधिक झुकाव तुम में एक कच्चापन दर्शाता है। जैसे की नयी डालियाँ नीचे की ओर झुकी होती है।

❖❖❖

असंगत आवाजों को

एक कोयल जब गाती है तो हम सिर्फ उसे ही सुनना पसंद करते हैं, दूसरे स्वरों की ओर से अपना ध्यान हटा लेते हैं। इसी तरह से जब तुम्हारे भीतर अपने सृजन के प्रति आत्मविश्वास, अपने काम से खुशी और लगाव, अपनी क्षमता को बढ़ाने की तत्परता तथा अपनी जो प्रगति हो रही है उसकी खुशी मौजूद होती है तो फिर दूसरी असंगत आवाजों को तुम सुनना पसंद ही नहीं करोगी। इसलिए अपने स्वर अधिक सुनो वनिस्पत दूसरों के ताकि तुम अधिक खुश रह सको।

❖❖❖

रक्षात्मक सहारा

एक शेर के पंजों और जबड़ों में ताकत होती है। एक हाथी की सूँड़ एवं पैरों में ताकत होती है। जबकि गेंड़े के सींग और बिच्छु के डंक में। सभी प्राणियों के पास इसी तरह की कोई न कोई ताकत अवश्य ही होती है। तुम्हारे में भी ऐसे ही गुण कहीं न कहीं जरुर छिपे होते हैं। तुम अपनी इस छुपी ताकत को पहचानती हो और इसका उपयोग करती हो तो वही तुम्हारी रक्षात्मक सहारा बन जाती है। एक अच्छा शिक्षक कक्षा के छात्रों की इसी छुपी ताकत को धीरे–धीरे पहचानने लगता है एवं शिक्षा में इसका उपयोग करता है।

❖❖❖

मौलिक रुप से लिखना

एक जानवर की मृत्यु हो जाने पर केवल छोटे मोटे जानवर ही उसकी लाश को खाते हैं जबकि बड़े जानवर खुद ही शिकार कर अपना भोजन करना पसंद करते हैं। अपनी मेहनत से धनार्जन करना एवं अपनी मेहनत से भोजन अर्जित करके उसे ग्रहण करने का सुख कुछ अलग ही होती है। सुने हुए यात्रा वृतांत और अपने से की गयी यात्राओं के सुख में बेहद अंतर होता है। कक्षा में दूसरों के बनाये नोट्स को रटने की बजाए पाठ को खुद समझकर मौलिक रुप से लिखना कहीं अधिक सुखदायी और लाभकारी होती है।

आपस में तालमेल रखते हुए

जब तीन या चार लोग एक साथ मिलकर नृत्य करते हैं तो उनके बीच आपसी ताल–मेल बेहद जरुरी है। क्योंकि सभी एक दूसरे के पूरक हैं तथा एक की मुद्रा दूसरे की मुद्रा को आगे बढ़ाती है। जब सभी मिलकर अच्छा नृत्य करते हैं तो एक अच्छे नृत्य का संपादन होता है। इसी तरह से तुम्हारे बोले या लिखे हुए विवरण जब तक पूरी तरह से आरंभ से अंत आपस में तालमेल रखते हुए एक लय को पूरा नहीं करते, तब तक वे अपना कोई अच्छा प्रभाव दूसरों पर छोड़ नहीं पाते है।

❖❖❖

संवेदनाएं एवं कलात्मकता

एक सर्कस के 3 घंटों में तुम अलग–अलग तरह की संवेदनाओं और भावनाओं से गुजरती हो और उसके बाद घर वापस लौटती हो। घर लौटकर भी सर्कस के ये कलाकार तुम्हें कभी रोमांच तो कभी हँसी तो कभी साहस तो कभी उत्सव का आभास दिलाता रहते हैं। इनकी यादें कभी भूलाये भी नहीं भुलाई जा सकती। अगर सचमुच में देखा जाए तो तुम्हारे पाठों में भी ऐसी संवेदनाएं एवं कलात्मकता जगह जगह पर छुपी हैं बस उन्हें अलग अलग करके समझना है। कई बार वे बेहद कठिन भी लगती है जैसे कठपुतलियों की तरह ढीठ होकर चुपाचाप बैठी हुई और उस वक्त शिक्षक इनसे नये–नये करतब करवाते हैं और उनकी रूप रेखा तुम्हारे दिमाग में बैठाते जाते हैं।

❖❖❖

ईमारतें याद आने लगती है

जब भी किसी बड़े देश का नाम याद आता है उस वक्त हमारे दिमाग में उसकी बड़ी ईमारतें याद आने लगती है। लगता ही जहाँ जितनी बड़ी बड़ी ईमारतें होंगी वो देश भी उतना ही अधिक बड़ा होगा। लेकिन कोई भी देश सिर्फ बड़ी बड़ी ईमारतों के बल पर नहीं चलता है वहाँ मौजूद खेत खलिहान, कारखाने तथा अन्य व्यवसायिक क्षेत्र ही इन ईमारतों की नींव होते हैं। इनके सर्वांगीण विकास के बाद ही बड़ी बड़ी ईमारतों का निर्माण होता है। हो सकता है ऐसी ही कोई बड़ी ईमारत या घर बनाने का तुम्हारा सपना हो लेकिन यह उतना आसान नहीं है। पहले तुम्हें तरह –तरह के श्रम एवं योजनाओं से इसकी नींव तैयार करनी होगी। जब बहुत अधिक श्रम और प्रयास एक साथ पकेगा तभी एक अच्छी ईमारत के लिए धनार्जन का काम शुरु होगा और ढेर सारे पैसे हासिल होने के बाद निर्माण कार्य शुरू हो सकेगा।

❖❖❖

काम करने का दायरा

एक बड़े किले या महल के टूट–फूट जाने के बाद भी उसमें इतना कुछ फिर भी बच जाता है कि वो आकर्षण का केंद्र बना रहता है और लोग उसे देखने आते रहते हैं, वैसे ही होते हैं महापुरुषों के कर्म जिनका दायरा इतना बड़ा होता है कि उनके मृत्युपरांत भी उनके काम वर्षों–वर्षों तक लोगों को लाभ पहुँचाते रहते हैं। इसलिए तुम्हारे काम का दायरा भी सूरज की रौशनी की तरह इतना बड़ा होना चाहिए कि सभी किरणों में तुम्हारा नाम झलके और लोगों को इससे हमेशा लाभ मिलता रहे।

मंथन होने के बाद

शरीर के गिरने पर उसमें कितनी क्षति हुई है उसे एक्सरे मशीन के द्वारा ही जाना जाता है, केवल छूकर नहीं। दूर से न ही किसी झील की गहराई का पता चलता है और न ही आसमान की ओर देखकर बादलों की ऊँचाई का। पेड़ अपनी गहराई धरती में छुपाये रखते हैं और बड़ी बड़ी चट्टानें तो किसी के स्पर्श और ठोकर का परवाह तक नहीं करती। प्रत्येक पाठ जब तुम्हारे सामने आते हैं तो वे अनजान की तरह होते हैं लेकिन उनका पूर्ण मंथन होने के बाद वे अपने घर की दीवारों तुम्हारे लिए खोलने लगते हैं। उनकी बनावट को तुम समझती हो और तुम्हें ये किस तरह का लाभ दे पायेगें यह भी साफ–साफ नजर आने लगता है।

❖❖❖

आग को स्वतंत्र नहीं रहने देना है

किसी भी आग को स्वतंत्र नहीं रहने देना है यह कम से कम पढ़ा व्यक्ति और बेवकूफ भी जानता है। इसलिए वह एक मचीस की डिबीया को भी संभालकर वह रखता है। वह जानता है कि एक तील्ली से आग को सुलगा लेना बहुत आसान है, लेकिन उस पैदा हुई आग को बुद्धिमानी से ही उपयोग में लाना होगा। एक लाभकारी शिक्षा आदमी की बुद्धि को तो बहुत अधिक विकसित तो कर देती है, लेकिन इसके दुरुपयोग और सदुपयोग का संयम भी खुद को ही करना होता है।

❖❖❖

विषयों की सूक्ष्म जानकारी

जिस जगह पहाड़ होते हैं और उनके साथ साथ बर्फ और झील भी साथ ही झील के चारों ओर हरियाली भी तो उन दृश्यों का मूल्य बढ़ जाता है। उसी तरह तुम्हारा लिखना केवल उत्तर देने का उद्देश्य मात्र न होकर जब वह अनूठे लयबद्ध वाक्यों एवं रुचिकर गठन तथा विषयों की सूक्ष्म जानकारी देने वाला हो जाता है तो फिर वह एक मूल्यवान पन्ना हो जाता है।

❖❖❖

पुराना जीवन

तुम हर दिन अपने पीछे पुराने अनुभव, पुराना जीवन छोड़ चुकी होती हो लेकिन सभी पुरानी चीजें असंख्य ईटों की तरह तुम्हारे चरित्र का निर्माण करती चली जाती है। जिनके बारे में तुम बाद में सोचती हो और गर्व महसूस करती हो। दरअसल तुम्हारा वर्तमान ही कल पुराना होकर एक अच्छे इतिहास का निर्माण करता है।

❖❖❖

मित्रता इसी तरह से बढ़ती रहती है

एक कुंभ के मेले में एक ही तरह का पानी करोड़ों लोगों को पवित्र स्नान करवाता है। एक ही तरह के लोकगीत या लोकनृत्य लाखों लोग सीखते हैं। एक ही तरह की भाषा को देश का प्रत्येक आदमी बोलता है। इस तरह से लोगों के संबंधो में कहीं न कहीं एक जैसे रूचि वाले विचार, आदतें या पसंद होती है जिनके सहारे वे एक दूसरे को समझ पाते हैं। एक कक्षा या समुदाय में मित्रता इसी तरह से बढ़ती रहती है।

❖❖❖

खोजा गया नया रास्ता

जब तक तुम्हारी शिक्षा लोगों के लिए एक नया रास्ता निर्मित नहीं कर लेती है तब तक वो सामान्य ही रहेगी। लेकिन जब तुम्हारे द्वारा खोजा गया नया रास्ता अनेक लोगों के अनुशरण के बाद विश्वसनीय हो जायेगा तो फिर तुम्हें ख्याति प्राप्त होने लगेगी। दुःख तो उस वक्त अधिक होता है जब तुम केवल दूसरों की बतायी हुई बहुत सारी चीजों का अनुशरण करती हो लेकिन तुम्हारे पास कोई एक भी चीज नहीं है जिसका कि दूसरे लोग अनुशरण कर सकें।

जीवन की समस्यायें

जीवन की समस्यायें अद्भुत होती है इनका हल गणित के किसी सवाल के तरह नहीं होता बल्कि अपने विगत अनुभव, चीजों को समझने की युक्ति, मनुष्य जीवन की समझ, लोगों के हक तथा अपना सामर्थ्य आदि को समझ कर ही हल किया जाता है। इसी विकसित बुद्धि के सहारे जो चीजें तुम्हारी समझ में आती भी नहीं या तुमने उसके बारे में कभी सुना भी नहीं फिर भी उन्हें तुम तुरंत समझ लेती हो। इस तरह की बुद्धि का विकास जितना तुममें विस्तृत एवं गहरा होगा, तुम उतने ही अधिक विशाल व्यक्तित्व की स्वामी होगी।

❖❖❖

कामों में सृजनशीलता

अच्छे और बुरे कामों की यह भी एक परिभाषा हो सकती है कि जो काम सृजनशीलता से किये जाते हैं वे अच्छे होते हैं तथा जिन कामों में सृजनशीलता नहीं होती वे साधारण किस्म के या सिर्फ समय काटने के लिए होते हैं।

❖❖❖

तुम्हारा प्रत्येक निर्णय

उद्योग से जनित क्षेत्र में लोग इंजीनियर बनने की लालसा अधिक रखते हैं जबकि खेती करने वाले बड़े क्षेत्र में लोग कृषि वैज्ञानिक और देश की सीमा के आसपास के लोग फौज में भरती होने में अपनी रूचि रखते हैं। इस तरह से अक्सर हमारे चुनाव निजी न होकर स्थान विशेष से प्रेरित रहते हैं। कभी स्थान, कभी जलवायु कभी परिवार की स्थिति तो कभी अपनी और मित्रों की रुचियाँ भी हमारे निर्णय पर प्रभाव डालती है। इसलिए अगर तुम ऐसा सोच रही हो कि कोई भी निर्णय तुम खुद अकेला ही कर रही हो तो तुम फिर गलती कर रही हो। जबकि तुम्हारा प्रत्येक निर्णय उपरोक्त बातों से हमेशा प्रभावी रहता है।

❖❖❖

एक हिंसक जीव के पास

अक्सर जिन जीवों के पास शिकार करने के लिए वैसी ताकत, खूंखरता और बनावट यानि आक्रमक पंजे, पैने जबड़े या नुकीले सींग नहीं होते वे शाकाहारी हो जाते हैं। एक हिंसक जीव के पास अलग किस्म का चातुर्य, फुर्तीलापन एवं दूसरों को बध करने की प्रवृत्ति हमेशा बनी रहती है। तुम अगर गौर करोगी तो देखोगी जिनके पास ताकत है वह इसके इस्तेमाल के लिए बैचेन रहेगा ही, जिनके पास पैसें होंगे वो इनका निवेश करेगा ही और जिनके पास कला होगी वो इसे दिखलायेगा ही। इस तरह से प्रत्येक मनुष्य अपनी ताकत के अनुसार सक्रिय हो जाते हैं या होने की कोशिश करते हैं। अगर तुम शिक्षित हो तो वैसा आचरण ही सबके सामने प्रकट करोगी और कोई गलत आचरण अगर भूल से कर बैठी भी तो उसे तुरंत ही सुधारना चाहोगी।

❖❖❖

अनुशरण करने की प्रवृत्ति

एक किसान को खेत जोतते देखकर दूसरे किसान का मन भी अपने खेत की ओर चला जाता है। वह भी उसे जोतना चाहता है और अपने खेत को फसलों से लहलहाते देखना चाहता है। एक उन्नति के स्रोत हमेशा दूसरों को अपनी उन्नति के लिए उकसाते रहते हैं। एक व्यक्ति अगर कोई समाज कल्याण का भार उठाता है तो साथ देने बहुत सारे व्यक्ति उठ पड़ते हैं। एक पुस्तक कुछ लोगों को अच्छी लगती है तो धीरे–धीरे लाखों लोग उसे पढ़ने लगते हैं। यह अनुशरण करने की प्रवृत्ति मनुष्य में बहुत अधिक है, इसलिए मनुष्य एक सामाजिक प्राणी एवं एक जैसे रहन–सहन वाला अधिक दिखायी पड़ता है साथ ही लगभग एक ही जैसी शिक्षा के माध्यम को अपनाकर शने–शने विकसीत होता जाता है।

❖❖❖

इनकी विशालता असीम है

एक सागर के बिल्कुल छोटे हिस्से को ही हम किसी पात्र में कैद कर सकते हैं और वैसे ही बर्फीले पहाड़ से थोड़ी बहुत बर्फ ही हम निकाल सकते हैं, लेकिन इनके पूरे हिस्से को न ही किसी जगह पर संचित कर सकते हैं और न ही पूर्ण रूप से नियंत्रित क्योंकि इनकी विशालता असीम है तथा फैलाव का दायरा अति विस्तृत है। इसी तरह से इस जगत् में ज्ञान का भंड़ार इतना विशाल है कि हम केवल इसका बेहद छोटा सा हिस्सा ही अपने मस्तिष्क में संरक्षित कर पाते हैं और वो भी कठिन परिश्रम के बाद। इसलिए यह घमंड करना कि हमने बहुत अधिक ज्ञान अर्जित कर लिया है, हमेशा मिथ्या ही रहेगा।

❖❖❖

एक अदृश्य सीमा रेखा

गाँव के लोगों के पास खेती करने के लिए जो जमीनें होती है उनके बीच कोई दीवार नहीं होती लेकिन सभी को मालूम होता है कि उनकी जमीन कहाँ से कहाँ तक है। जैसे कोई दीवार तो नहीं है लेकिन एक अदृश्य सीमा रेखा सबके बीच खींची हुई होती है। इसी तरह मस्तिष्क में बहुत सारा ज्ञान और बातें होती हैं और जिनका अपना अपना एक अलग आकार होता है और वे बिना किसी दीवार के भी अपने अलग–अलग आस्तित्व रखती है। तुम कभी अपने ज्ञान को टटोलो तो इसके अलग अलग क्षेत्र का पता लग जाएगा साथ ही इसके फैलाव का और अद्भुत बात है कि जितना तुम नया ज्ञान अर्जित करती हो वह तुम्हें एक नयी जमीन देकर समृद्ध करता चला जाता है।

❖❖❖

वाक्यों की संरचना

एक अच्छा कलाकार विभिन्न तरह के चरित्रों को लोगों के सामने प्रस्तुत करता है और अगर हम इसे नाटक न मानकर सचमुच में सामने घट रही कोई घटना मान लें तो वह कलाकार अपने व्यक्तित्व को छोड़कर किसी दूसरे के व्यक्तित्व एवं चरित्र को जी रहा होता है। इस तरह वह हर दिन नये–नये चरित्र को निभाता है और इसके बावजूद दरअसल वो एक ही मनुष्य होता है। इसी तरह वाक्यों की संरचना होती है, कई तरह के शब्दों से उनकी जगह अदल–बदल कर तथा थोड़े से और कुछ शब्दों को जोड़कर प्रत्येक वाक्य का कभी जटिल तो कभी सरल तो कभी बेहद भावपूर्ण बनाया जाता है।

❖❖❖

अवस्था में क्रांति लाना

किसी भी चीज या अवस्था में क्रांति लाना यानि जो व्यवस्था अभी चल रही है उससे एक अच्छी व्यवस्था को लोगों के बीच रखना तथा उसे स्थापित करना है। ताकि लोगों का जीवन इस नयी व्यवस्था से और भी अधिक खुशहाल हो। ऐसी किसी क्रांति का प्रयोग शिक्षा में भी संभव है। इसलिए तुम पाओगी शिक्षा के पाठ्यक्रम में कई बार बदलाव किये जाते हैं ताकि नये जमाने के छात्र नयी चीजों को नये तरीके से पढ़ सके। ऐसे बदलाव अक्सर अनेक विद्वानों से विचार-विमर्श करने के बाद किये जाते हैं, ताकि छात्रों के उच्च स्तर की अति उपयोगी शिक्षा मिल सके।

❖❖❖

तरह तरह की पीड़ाओं का स्वाद

यह जिंदगी इतनी आश्चर्यों से भरी है कि वह प्रत्येक व्यक्ति को तरह–तरह की पीड़ाओं का स्वाद चखा ही देती है। कोई ऐसा व्यक्ति बचा नहीं होता है जिसे किसी न किसी तरह की पीड़ा कभी नहीं हुई हो। फर्क उस वक्त महसूस होता है जब एक उच्च इच्छाशक्ति वाला व्यक्ति कितनी ही तरह की पीड़ाओं और कठिनाईयों के बावजूद भी अपनी हिम्मत नहीं हारता तथा अपने मकसद को पूरा करने के लिए अथक प्रयत्न अपनी मृत्यु तक करता रहता है।

❖❖❖

कला की आत्मा

सुंदरता ऐसी चीज होती है कि वह एक बार में समझ में नहीं आती, उसे बार–बार देखने एवं समझने की कोशिश करने पर उसका थोड़ा सा घूंघट हमारे सामने खुलता है। शुरु में उसकी बाहरी बनावट जैसे स्थूल रुप से ही हमें परिचय होता है, धीरे–धीरे कलाकृति और अंत में कला की आत्मा से हमारा परिचय होता है। एक खूबसूरत चीज को देखते समय उसकी संरचना, दीवारों पर की गयी कारीगरी, रंगों का तालमेल, ऊँचाईयों का सामंजस्य, पत्थरों की गुणवत्ता, पत्थरों की बनावट, विभिन्न कोणों से उसकी बनावट और साज सज्जा का ध्यान रखना जरूरी होता है। जब हम इस कद्र कला की गहराई में जाते है तब महसूस करते हैं कि हमने कितनी खूबसूरत चीज देखी है।

❖❖❖

खतरनाक आदत

जो लोग पहली बार सिगरेट पीते हैं अपने नजदीकी दोस्तों की देखरेख में ही ऐसा करते हैं, जबकि अच्छे कार्य एवं अच्छी चीजों का उपयोग करना इनके माँ–बाप उन्हें बचपन से ही सीखाते आयें हैं। जिन्हें वह रोजमर्रा की जिंदगी में अपनाता रहता है। प्रत्येक बच्चे के लिए उसके माँ–बाप ही सबसे अधिक विश्वसनीय होते हैं जिनकी हर बात को वह आँखें मूंदकर मान लेता है या यकीन करता है। जब इतने विश्वसनीय अभिभावक के वह करीब है तो फिर मानसिक आघातों एवं समस्याओं से निपटने के लिए सिगरेट या दूसरी नशीली वस्तुओं का सहारा लिया जाना एक अति खतरनाक आदत में अपने आपको परिवर्तीत कर देना तो है ही साथ ही बड़ों के प्रति अपनी श्रद्धा में भी गिरावट लाना है।

❖❖❖

अपना अंतिम छोर

समुद्र की लहरों की ताकत को बीच में नहीं बल्कि किनारे पर ही महसूस किया जाता है। तुम्हारी ताकत की पहचान तुम्हारे बोलने या लिखने पर ही होती है। यही रास्ते हैं जहाँ से तुम्हारी ताकत बाहर की ओर अपना छोर खोलती हैं। जब तुम्हारे भीतर ज्ञान का भंडार असीम हो तो समुद्र की लहरों की तरह जितना भी बोलो या लिखो यह वेग हमेशा बना ही रहेगा। जैसे डालियों से पत्ते और फूल उनके मृत्युकाल तक फूटते ही रहते हैं।

❖❖❖

अपनी अलग अलग आवाजें

सभी लोगों के पास एक स्पष्ट और सुनिश्चित आवाज होती है यह ही उनकी पहचान है। इसलिए एक कक्षा में छात्रों से पिन ड्राप साइलेंस में रहने का कहा जाता है, ताकि शिक्षकों की बातें ही छात्रों के कानों तक पहुँचे न कि दूसरे छात्रों की आवाज से मिश्रीत होकर। वैसे गणित पढ़ाने वाले शिक्षक बोलकर कम, लिखकर अधिक बताना पसंद करते हैं, जबकि समाज विज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षक केवल बोलते ही जाते हैं। वहीं पदार्थ विज्ञान और रसायन शास्त्र पढ़ाने वाले प्रयोग कर–कर के दिखाना चाहते हैं। इस तरह से सभी तरह की शिक्षा एवं शिक्षकों की भी अपनी अलग–अलग आवाजें होती हैं।

❖❖❖

जुबान खोलने की ताकत

एक कलम में कैद स्याही का कोई मूल्य नहीं होता लेकिन जैसे ही यह कागज पर उतरती है अनगिनत भाषाओं में अपनी जुबान खोलने की ताकत उसमें आ जाती है। यानि स्याही एक है लेकिन अलग–अलग तरह से उसे अंकित कर अलग अलग भाषा के द्वारा लोगों तक अपनी बात पहुँचायी जाती है। इस स्याही की ताकत सिर्फ यहीं तक बस नीहित नहीं है, इससे चित्र बनाकर अशिक्षित लोगों तक भी अपना संदेश पहुँचाया जा सकता है। तुम्हारा ज्ञान भी इस स्याही की तरह ही होता है, अनगिनत रुपों में इसे ढाला जा सकता है, असंख्य लोगों तक इसके माध्यम से अपनी बात पहुँचायी जा सकती है। इसलिए इसकी शक्ति असीम है।

❖❖❖

रंगों की समझ

दुनिया में हमारे जन्म होने के बाद जितने भी दृश्य देखे गये उन्हें हम रंगों के सहारे ही पहचानते हैं या याद रखते हैं। इसलिए तुम में रंगों की समझ होना अति आवश्यक है। जब तक तुम रंगों को ठीक तरह से नहीं समझती हो, किसी भी दृश्य पर तुम्हारी एकाग्रता ठीक से नहीं बैठेगी। सूरज के उदय होने से लेकर अस्त होने तक के समय में प्रकृति के रंगों में जितने बदलाव होते हैं, उन्हें गौर से देखने पर तुम्हारी रंगों संबंधी समझ बढ़ेगी।

❖❖❖

सुरक्षा के उपाय

जब हम सोचते हैं कि हम सुरक्षित नहीं हैं तो दीवार बनाते हैं, ताले लगाते हैं और सुरक्षा कर्मचारी रखते हैं। जितना अधिक हम अपने आप को असुरक्षित समझते हैं उतने ही अधिक सुरक्षा के उपाय लगाते हैं। लेकिन जिनके पास ज्ञान होता है, उनके पास एक आत्मविश्वास भी होता है फिर वे छोटी–मोटी चीजों से घबराते नहीं हैं। वे जानते है अगर उन्हें कुछ खोना भी पड़ा तो उनके पास सामर्थ्य है कि वे फिर से खोये हुए को हासिल कर लेंगे।

❖❖❖

कँटीली झाड़ियाँ

एक रेगिस्तान की कठिनतम जलवायु में गर्म रेत पर सफर करते हुए ऊँट को जगह–जगह पर कँटीली झाड़ियाँ देखकर यह संतोष होता रहता है कि उसका प्रिय भोजन आस–पास ही है और वह कठिन परिस्थितियों को भी झेल जाता है और उसमें उत्साह और ताजगी बनी रहती है। तुम जब सारे काम छोड़कर कठिन पढ़ाई से जूझती रहती हो तो माता–पिता बेहद खुश होते है और अपना ध्यान तुम्हारी ओर, अधिक से अधिक लगाते हैं। फिर उनका अधिक ध्यान तुम्हारी ओर रहने पर अपनी पढ़ाई के अलावा दूसरी अन्य चिन्ताओं से तुम मुक्ति पा लेती हो, क्योंकि तुम्हें उनसे लगातार मदद मिलती रहती है।

❖❖❖

छुपाकर रखना

फुटबॉल का खेल शुरू करने के कुछ ही दिनों के अभ्यास से खिलाड़ियों के पाँवों में चुस्ती और ताकत दिखायी देने लगती है। उसकी आँखे चौकन्नी और शरीर पूरा संतुलित आकार में ढ़लता हुआ दिखायी पड़ता है। वैसे ही तुम पढ़ाई के सही मार्ग में अगर निरंतर क्रियाशील हो तो शिक्षक के समक्ष एक अच्छी पढ़ने वाली छात्रा के समान गुण तुम में जरूर झलकेंगे। इसे तुम छुपाकर रखना भी चाहो तो छुपा नहीं पाओगी। क्योंकि कठिन मेहनत के बाद आये हुए बदलाव को खोना अब तुम्हारे बस में नहीं है। हाँ इस बदलाव की कोई सीमा नहीं है यह निरंतर एक अच्छे मनुष्य से बहुत अच्छे मनुष्य में बदलने की निरंतर प्रक्रिया है।

❖❖❖

चीजों का अधिक से अधिक उपयोग

हर दिन कितनी ही चीजें हमारे सामने से गुजरती या हम उसके सामने से हम गुजरते हैं लेकिन सभी का न ही हम उपयोग कर पाते हैं और न ही सभी को हम ठीक से समझ पाते हैं। चीजों का अधिक से अधिक उपयोग करना हमारी क्षमता को दर्शाता है। तुम आज जो भी पढ़ रही हो वह सभी इसी क्षमता को विकसित करने में मददगार होता है। जिस दिन तुम सारी उपलब्ध चीजों का उपयोग कर पाओगी या समझ पाओगी, उस दिन तुम्हें इस शिक्षा का महत्व और भी अच्छी तरह से समझ में आयेगा।

❖❖❖

दुर्गुणों की मिलावट

एक अच्छी आलोचना चाहे कितनी भी कटु क्यों न हो, चाहे कितनी ही चुभने वाली क्यों न हो लेकिन उसका इशारा गुणों में छुपी हुई दुर्गुणों की मिलावट को बतलाता है। इस मिलावट को निकाल देने के बाद केवल गुण ही तो बच जाते हैं।

❖❖❖

गौरव एक वृक्ष की मालकियत का

बीज हवा के सहारे उड़कर जिस भूमि पर पनपने लगते हैं वह भूमि ही उसकी माँ हो जाती है। अब उसे बड़ा करने एवं पालन–पोषण का जिम्मा उसी भूमि का ही हो जाता है। इसके बदले उस भूमि को मिलता है गौरव एक वृक्ष की मालकियत का। जीवन में जिम्मेवारियाँ इसी तरह से कई बार हमारे सिर पर आती हैं और जिनका निर्वाह अगर हमने किया तो वे हमारी हो गयी वरन् किसी और की। लेकिन तुम इन जिम्मेवारियों को निभाकर किसी न किसी खूबसूरत चीज की हकदार अवश्य बन जाती हो।

❖❖❖

कुछ खोने का दुख

एक नई कक्षा और नयी पुस्तकें साथ ही पुरानी पुस्तकों की विदाई। अजीब सी बात लगती होगी तुम्हें कि ये परीक्षाएँ खत्म हुई और अपने साथ–साथ तुम्हारी पुरानी पुस्तकें भी ले गयी। साथ ही उनका प्यार भी। अब दोबारा नयी कक्षा, नयी किताबें और इनसे नये तरह का प्यार। इन नयी चीजों पर भी यकीन करना होता है तुम्हें। कुछ खोने का दुख लेकिन कुछ उससे अधिक पाने का सुख लिए तुम आगे बढ़ती जाती हो।

❖❖❖

मुश्किलों का सामना

कहते हैं लड़ाई में तलवार जब तक सैनिक के सर के ऊपर से नहीं गुजरी तब तक उसने लड़ाई लड़ी ही नहीं। उसी तरह से जब तक तुमने मुश्किलों का सामना नहीं किया तब तक उनसे बाहर निकलने की बात आयी कहाँ से आई? एक सुरंग में प्रवेश करने के बाद ही तुम उससे बाहर जाती हो, फिर तुम कह सकती हो कि सुरंग कितनी सँकरी है। जीवन के अनुभव पाने के लिए तरह–तरह की चीजों का सामना करना ही पड़ता है चाहे दो पल के लिए या वर्षो के लिए। जब तक पाठ की गहराई में तुम नहीं उतरती उसकी जटिलता को तुम समझ नहीं पाती हो और जब तक जटिलता के तल पर तुम नहीं उतरती हो तब तक तुम्हारी बाहरी भाग–दौड़ तुम्हें साधारण प्राणी ही बनाये ही रखेगी और उच्च शिक्षा का मार्ग कुछ दिनों में बंद हो जायेगा।

❖❖❖

तुम्हारी पूरी एकग्रता

जब तुम्हारे सामने सोना या चाँदी जैसी बहुमूल्य वस्तुओं को वजन किया जा रहा होता है उस वक्त तुम्हारी पूरी एकग्रता काँटे पर रहती है जबकि कम बहुमूल्य चीजों के वजन होने पर तुम उतना अधिक ध्यान नहीं देती। यह तुम्हारी बहुमूल्य चीजों के पीछे तत्परता एवं सजगता दर्शाती है। जिस दिन तुम्हें आभास हो जायेगा कि शिक्षा कितनी मूल्यवान है, उस दिन उसके प्रति तुम पूर्ण एकाग्रचित्त हो जाओगी एवं बाकी सारी चीजें भूल जाओगी।

❖❖❖

पेड़ का होना बहुत जरूरी है

पेड़ के फलों का मीठा स्वाद ही लोगों को आकर्षित करता है तथा पत्तों की हरियाली देखकर लोग खुद ब खुद उसकी छाया में चले आते हैं। फिर जहाँ पेड़ है वहाँ मनुष्य और जहाँ मनुष्य है वहीं पेड़। दोनों जैसे एक ही पसंद वाले प्राणी और दोनों की जड़ें धरती पर ही। इनका इतना अधिक घनिष्ठ संबंध है कि लगता है प्रत्येक व्यक्ति के पास एक पेड़ का होना बहुत जरूरी है। इसी तरह से जो पाठ तुम्हारे घनिष्ठ हो जाते हैं लगता है कभी भी वे साथ न छोड़े तुम्हारा।

❖❖❖

हर पन्ना दर्शाना चाहता है

एक पुस्तक अपने आप में एक जैसे सैकड़ों पन्ने तो जरूर लगाये हुए हैं लेकिन उसके प्रत्येक पन्ने का अलग-अलग अर्थ और व्यक्तित्व है, और हर पन्ना अलग-अलग तरह से तुम पर अपनी सत्ता कॉबिज करना चाहता है। हर पन्ना दर्शाना चाहता है कि वह दूसरे अन्य पन्नों से श्रेष्ट है। इसलिए इन श्रेष्ठताओं से भरी पुस्तक का बेहद बारीकी से अध्ययन करना जरुरी है, तभी पुस्तक की पूरी संरचना का ठीक-ठीक अर्थ तुम्हें मालूम होगा।

बुद्धि जब जागती है

जब तुम्हारे भीतर मौजूद शब्द या विचार सो जाते हैं, उनका इस्तेमाल नहीं होता तो फिर तुम्हारा जीवन विचारहीन और शुष्क हो जाता है। इससे ही जीवन में निराशा उत्पन्न होती है, यानि तुम्हें अपनी क्षमता पर कोई भरोसा नहीं होता तथा बुद्धि सोयी हुई मालूम होती है। बुद्धि जब जागती है तभी वह सक्रिय होती है और सक्रिय व्यक्ति ही हर जीवन की लड़ाई को लड़ता भी है और जीतता भी है।

❖❖❖

व्यवहार में बेहद संकीर्ण

लोहा जब गर्म होता है, तुम्हें इतनी छूट देता है कि तुम चाहो जिस आकार में उसे ढाल लो। गीली मिट्टी भी इसी तरह की छूट तुम्हें देती है तथा हाथ में रखी कलम भी, कि जो जी में आए लिख डालो। लेकिन इतनी अधिक छूट के बाद भी हम केवल सबसे महत्वपूर्ण कामों में ही उनका उपयोग करते हैं। ये स्वतंत्रता जैसे शब्द नाम में बहुत ऊँचे हैं लेकिन व्यवहार में बेहद संकीर्ण क्योंकि हम हमेशा अपने एक निश्चित दायरे में ही रहकर काम करना पसंद करते हैं और ये बड़ी–बड़ी बातें और रूपक अक्सर हमारे काम के नहीं होते अतः इनकी ओर पूरी समझदारी से बढ़ना आवश्यक है।

❖❖❖

मजबूत हाथ

कभी–कभी एक तलवार से ही दस धड़ अलग कर दिये जाते हैं तो कभी–कभी सिर्फ एक ही। सब कुछ उसे चलाने वाले हाथों की मजबूती पर ही निर्भर होता है। एक मजबूत हाथ सभी का मन मोह लेते हैं, वे पूरे जगत में शोभा पाते हैं लेकिन वे सर काटने के लिए नहीं बल्कि जो लोग सर काट रहे हैं उनसे बचाने के लिए होते हैं। अच्छे हाथों में रखी कलम भी कुछ ऐसा ही कोई काम करती है।

❖❖❖

पढ़ाई एक सजीव चित्र हो जाती है

एक ही पत्थर लेकिन उससे अनगिनत भाव भंगिमा का निर्माण संभव है। सभी में उसे बनाने वाला कलाकार बोलता है। कलाकृतियों के उभार और ढलान में कलाकार के हाथ का दबाव दिखलायी देता है और चेहरा सुन्दर होते हुए भी कभी क्रुद्ध तो कभी शांत। अगर पत्थरों में जीवन नहीं था तो किसने दिया? निश्चित ही कलाकार ने अपनी सांसें, थकान और संवेदना आदि उसे प्रदान की है। यही आत्मिक प्रेम और मेहनती जीवन, पढ़ाई तुमसे माँगती है जिसके उड़ेले जाने पर पढ़ाई एक सजीव चित्रण हो जाती है, फिर तुम्हारा ही बिम्ब उसमें छलकता है और तुम अपनी इन किताबों पर दृढ़ता से अपना हक दर्ज करती हो, उन्हें आत्मसात् करने के एवज में।

❖❖❖

प्रत्येक नयी चीजों के स्पर्श से

प्रत्येक नयी मिट्टी शुरू में अलग–अलग तरह का स्पर्श देती है और फिर उसके मुलायम या रूखड़ेपन के आदि हो जाते हैं हम। एक आचार तीखा लगता है शुरू में फिर उसके स्वाद से तृप्ति होती है। प्रत्येक नयी चीजों के स्पर्श से एक टकराहट होती है मन में फिर वे ठहरकर चुपचाप बैठ जाती हैं। हर बार हमें यह नई टकराहट चाहे वह किसी भी तरह क्यों न हो, एक नया अनुभव प्रदान करती है। तुम किसी से घुलमिल गयी तो वह मित्र हुआ वरन् वह पहले जैसा अजनबी ही बना रह गया। हर मित्रता जैसी चीजों से किसी न किसी शिक्षा का संचार होता है, चाहे वे मित्र निर्जीव हो या सजीव।

❖❖❖

कलम के माध्यम से

जब राज्य में शांति नहीं होती तथा उथल-पुथल चलती रहती है तो सत्ता के हाथ से जाने का भय राजा के घर तक जाता है। इसलिए वह प्रजा के बीच हमेशा शांति चाहता है। जब आग, शस्त्र और गुस्सा शांत हैं तो चारों तरफ शांति रहती है, इसलिए बुद्धिमान राजा इनके प्रयोग पर ही सबसे अधिक नियंत्रण रखता है। तुम्हारा क्रोध में आना ही आग है और शब्दों को आक्रोशित कर देना अस्त्र उठा लेने जैसा ही है और अक्सर कलम के माध्यम से ही बातें आग की तरह दूर-दूर तक फैलती हैं। इसलिए जब क्रोध निरस्त हो जाता है एवं प्रजा शब्दों का संयमपूर्ण प्रयोग करती है, उस राज्य में शांति का वास निश्चित ही है और जहाँ चारों ओर से शांति हो तभी राजा अपने राज्य में सृजन कार्यों की स्थापना के लिए अग्रसर हो सकता है।

❖❖❖

शिक्षा वैसा नशा है

सभी अपनी मेहनत की रोटी तोड़ते और चौन से खाते–पीते हैं तो राजा खुश होता है। राजा हमेशा सर्तक होता है कि उसके यहाँ उपद्रव न हो इसलिए शिक्षा और नीति वाक्यों का अधिक से अधिक प्रयोग करता है। उन्हें मालूम कि शिक्षा जिनके पाँवों को जकड़ लेगी फिर वो शांत हो जाएगा क्योंकि शिक्षा वैसा नशा है जिसके आगे कोई दूसरा नशा ठहरता भी नहीं है।

❖❖❖

एक हारा हुआ व्यक्ति

एक हारा हुआ व्यक्ति अपने मन की बातें सबों से कहता रहता है। वह आसानी से सबों की बात मान लेता है लेकिन अपनी बात मनवाने की कोई तत्परता उसमें नहीं होती है। ऐसा व्यक्ति अपने पाठ के उत्तर देने में भी सक्षम नहीं होता क्योंकि उसे जो उत्तर देने हैं यानि अपनी बात मनवानी है उसका आग्रह भी बहुत कम होता है तथा उसके उत्तर से कोई ठोस नतीजा भी नहीं निकलता और उसके उत्तर असफल होते हैं। जो लोग दृढ़ निश्चयी हैं उनके उत्तरों में भी एक प्रकार का आग्रह तथा दृढ़ता झलकती है, जिससे उसके व्यक्तित्व एवं उसके द्वारा की गयी तैयारी का भी पता चलता है।

❖❖❖

इस युग में

ढेर सारे फूलों को इकट्ठा करने के बाद एक माला बनती है। वैसे ही ढेर सारी बालू, ईंट और सीमेंट को इकट्ठा करने पर घर और ढेर सारी लोहे की चद्दार एवं खंभों को खड़ाकर एक कारखाने का निर्माण किया जाता है। इस युग में थोड़े से कुछ भी नहीं होता। सभी को अत्यधिक प्यार चाहिए, अत्यधिक धन, अत्यधिक मान–सम्मान और किताबों को भी चाहिए ढ़ेर सारी एकाग्रता। थोड़ी सी शिक्षा से मन संतुष्ट नहीं होता, उसे भी चाहिए ढेर सारी पढ़ाई और मन जहाँ सुन्दर और अच्छी चीजों से हटा वह केंद्रित होने लगता है बुराईयों एवं अन्य बहुत सारी व्यर्थ की चीजों में, क्योंकि मन का काम ही अपने को उलझाये रखना। चाहे अच्छी चीजों में या बुरी चीजों में। चाहे तो साधना में या अत्यधिक आलस्य में।

❖❖❖

जो चीजें छोटी रहती हैं

आसमान में इतने सारे तारें हैं कि तुम उन सबकी पहचान नहीं कर सकती हो जबकि चाँद के छोटे–बड़े सभी आकार तुम्हें याद हो जाते हैं। यहाँ तक कि उसमें मौजूद दाग भी। जो चीजें छोटी रहती हैं, पानी की बूँद के सामान उन्हें याद रखना बेहद मुश्किल है, जबकि तालाब, नदी या कुएँ के आकार हमें हमेशा याद रहते हैं। इसलिए तुम्हारे द्वारा किये गए सामान्य कार्यों का कोई खास महत्व नहीं होता।

❖❖❖

जिसकी रोशनी असंख्य लोगों की होगी

सूरज की ओर हम इसलिए देखते हैं क्योंकि वह हमें प्रकाश देता है। चाँद के सहारे आसमान को थोड़ा–बहुत हम समझ लेते हैं, मरूस्थल की गर्मी के सहारे मुश्किलों का अंदाजा लग जाता है, फिर भीषण गर्मी में हमारी एक ही चाह होती है, वह है ठंड और तलाशते हैं हम छाया ही छाया। तुम्हारे पास भी जब लोगों का भला करने की योग्यता होगी तो तुम से लोग आकर्षित होंगे, फिर तुम एक प्रकाश पुंज हो जाओगी जिसकी रोशनी असंख्य लोगों की होगी न कि केवल तुम्हारी ही।

उन्हें फिर से पा लेने पर

हर खोयी हुई चीज का पाने की तुम में बैचेनी होती है, हर खोना लापरवाही या अनजाने में होता है लेकिन जैसे ही तुम पहचान लेती हो कि क्या तुमने खोया है, तो फिर उसे पाने के लिए अग्रसर होने लगती हो। इसलिए पाठ जो तुम्हारे लिए थे, जो तुम्हारे अपने हो सकते थे लेकिन नहीं हो पाये उन्हें फिर से पाने और अपनाने की एक बैचेनी तुम्हारे भीतर होती है। उन्हें फिर से पा लेने पर प्रसन्नता वरन् न पाने पर मन उदास हो जाता है।

❖❖❖

नये-नये विकास क्रम में

शतरंज खेल में बाजी खत्म होने के बाद मोहरा फिर से नयी तरह से खेलता है यानि तुम्हारा दिमाग उसे फिर से नयी-नयी योजनाओं में लगा देता है। बाजी नयी, लेकिन पुराने मोहरे फिर से नये उत्साह से लड़ाई में जुट जाते हैं। तुम्हारा दिमाग भी कभी हारता नहीं है वह हर बार नये-नये प्रयास में लगा रहता है। सारी दुनिया इसी तरह के नये-नये विकास क्रम में लगी रहती है।

❖❖❖

नवीन उत्साह

एक हारा हुआ सिपाही नई तलवार, नई पोशाक, नये जूतों का स्नेह पाकर फिर से खड़ा हो जाता है और अपनी पिछली हार को भूल जाता है। फिर तुम नई कलम, नयी कॉपी, नई पुस्तकों को पाकर अपने में नवीनता क्यों नहीं ला सकती हो। याद रहे कि हमेशा नवीन उत्साह ही लोगों के लिए विजय का मार्ग प्रशस्त करता है, बोझिल मन कभी नहीं।

जो समझदार है

किसी भी खेल में मुख्य प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ी को हरा देने के बाद बाकी के खिलाड़ी भी अपना हौसला खोने लगते हैं। अतः जो समझदार है सबसे पहले मुख्य बातों को पकड़ते हैं बाकी चीजें तो फिर अपने आप काबू में आ जाती है। जैसे साँप से विष निकाल देने के बाद उसके सारे अंग साधारण एवं निष्फल हो जाते हैं और वह हमारे वश में आ जाता है।

–समाप्त–